POST GRADUATE GOVERMENT COLLEGE FOR GIRLS
SECTOR – 11, CHANDIGARH

COURAGE TO KNOW

Cultural Society
(Session 2024-25)

INDEX:-

Sr. No.	Activity	Date	Page No.
1	Orientation Programme	10.08.2024	1
2	Talent Hunt	17.08.2023	2
3	Sitar Recital by Sh. Subrata De	23.08.2024	3
4	Lecture-cum-demonstration by Mohan Khokar	17.09.2024	4
5	Mandolin Recital by Smt. U. Nagamani	20.02.2025	5
6	Vocal Recital by Pt. Ulhas Kashalkar	26.02.2025	6
7	NOSTALGIA Interactive Report	01.03.2025	7

Orientation Programme by Cultural Society

Orientation programme held on 10.08.2024 in Music and Dance Department for the fresher's of under graduate classes. Prof. Anita Kaushal principal of the college was the chief guest on the college. Mr. Kanwar Iqbal Singh, Dean and Dr. Guneeta Chadha, Vice-Principal of the college also graced the occasion. Addressing the student on the occasion Principal Prof Anita Kaushal congratulated the department of Music and Dance and gave the blessing to new students.

Talent Hunt Organised by Cultural Society

Music and Dance department organised Talent hunt on 17.08.2023 in the College auditorium. More than 50 students participated in Talent contest and approximately 250 students witnessed the Show.

23.08.2024

Sitar Recital by Sh. Subrata De accompanied by Pt. Mithlesh Jha on Tabla

सितार वादक सुभ्रता की प्रस्तुति ने बांधा समां

चंडीगढ़ : पोस्ट ग्रेजुएट गवर्नमेंट कालेज फार गर्ल्स सेक्टर–11 में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को इंडियन काउंसिल आफ कल्चर रिलेशन आइसीसीआर के सहयोग से आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्रस्तुति देने के लिए सितार वादक सुभ्रता डे और उनके साथ तबले पर संगत देने के लिए मिथलेश झा पहुंचे थे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर प्राचीन कला केंद्र की रजिस्ट्रार शोभा कौसर मौजूद रहीं। कार्यक्रम का आरंभ राग भैरव से किया, जिसमें भगवान की स्तुति के बाद उन्होंने आलाप जोड़, विलंबित ताल, मध्य लय और द्रुत ताल में प्रस्तुति दी • कालेज प्रबंधन

<u>**Lecture-cum-demonstration by Mohan Khokar-17.09.2024**</u>

Cultural Society of P.G. Govt. College for Girls, Sector-11, Chandigarh in collaboration with Sangeet Natak Academy organised a Classical Dance performance today. Prof. Dr. Anita Kaushal, Dean of the college, Mr. Kanwar Iqbal Singh, Vice-Principal Dr. Shashi Wahi Khullar and HOD of Dance department Dr. Amarjeet Kaur, chair person of sangeet natak academy Mr. Sudesh Sharma dignitaries and others members of cultural society lighted the ceremonial lamp in the beginning of Lecture cum demonstration PGGCG-11 MA students performed Dance.

ब्यूरो/गुड़गांव मेल

चंडीगढ़। चंडीगढ़ संगीत नाटक अकादमी के संभाषण एवं प्रदर्शन श्रंखला के अंतर्गत बुधवार को स्नातकोत्तर राजकीय महिला महाविद्यालय, सेक्टर 11, चंडीगढ़ के प्रांगण में भारतीय नृत्य के पितामह कहे जाने वाले नर्तक स्व. मोहन खोकर के जीवन चक्र पर आधारित पुस्तक के विमोचन के अवसर पर उनके पुत्र प्रो. आशीष खोकर ने उपस्थित विद्यार्थियों एवं शहर के गणमान्य व्यक्तियों को एक डाक्यूमेंट्री एवं अपने उद्बोधन के माध्यम से स्व. मोहन खोकर के जीवन वृतांत पर प्रकाश डाला 7 बुधवार को स्व. मोहन खोकर की 25वीं पुण्य तिथि भी है। इस अवसर पर महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा मनोहर नृत्य भी प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता चंडीगढ़ संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष सुदेश शर्मा ने की। कार्यक्रम में महाविद्यालय की प्रधानाचार्या प्रो. डॉ. अनीता कौशल, संगीत के प्राध्यापक प्रो. हरविंदर सिंह, नृत्य विभागाध्यक्ष सुनीता शर्मा, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के फिल्म विभागाध्यक्ष दलजीत सिंह, संगीतज्ञ अरविंद शर्मा, आर. डी. कैले, विनोद पंवार, अमिता गंगानी, संस्कार भारती पंजाब प्रांत के सह मंत्री ऋषिराज तोमर, प्रसिद्ध नृत्यांगना नंदिता पुरी, चंडीगढ़ संगीत नाटक अकादमी के सचिव राजेश आत्रेय एवं महाविद्यालय की प्राध्यापिकाएं तथा काफी संख्या में छात्राएं उपस्थित थी। अपने उद्बोधन में प्रो. आशीष खोकर ने बताया कि 30 दिसम्बर 1924 को क्वेटा, बलूचिस्तान में जन्मे मोहन खोकर ने देश की स्वतंत्रता से पूर्व ही हिन्दुस्तान आकर तत्कालीन मद्रास में अपना निवास बनाया तथा एक दक्षिण भारतीय एम. के. सरोजा से विवाह कर वहीं रहने लगे। मोहन खोकर प्रथम ऐसे सिख नर्तक थे जिन्होंने अपने जीवन काल में भरतनाट्यम, कत्थक, कुचिपुड़ी, लोक नृत्य इत्यादि नृत्य की सभी कलाओं में अध्ययन किया एवं महारथ हासिल की तथा जीवन पर्यन्त नृत्य की सेवा में ही लगे रहे।

<u>Mandolin Recital by Smt. U. Nagamani-20.02.2025</u>

Cultural Society of PGGCG-11, Chandigarh in Collaboration with SPIC MACAY organized programme for Music Vocal, Instrumental and Dance students on 20.02.2025 at 12:00 PM. Principal Pro. Dr. Anita Kaushal, Mr. Kanwar Iqbal Singh Dean, Dr. Nisha Aggarwal Vice-Principal and Convenor Dr. Amita Sharma and others members of cultural society lighted the ceremonial lamp in the beginning concert .

दैनिक भास्कर

सिटी लाइफ 21-02-2025

‘संगीत से जुड़ें तो उसे रूह में उतार लें’

Performance

चंडीगढ़ | वीरवार को सेक्टर-11 के पीजीजीसीजी में स्पिक मैके और कॉलेज की कल्चरल सोसायटी की ओर से कल्चरल प्रोग्राम आयोजित किया गया। इसमें मैंडोलिन पर कर्नाटक म्यूजिक परफॉर्म करने वाली पहली महिला यू नागमनी ने परफॉर्मेंस दी। इनके साथ में मृदंगम पर मदीपक्कम पी सुरेश, घाटम वाद्य पर एन राजारमन ने संगत की। लिजेंड्री त्यागराजा की कर्नाटक कंपोजिशन को मैंडोलिन में प्रस्तुत किया। इस दौरान स्टूडेंट्स के साथ सवाल और जवाब का सिलसिला भी जारी रहा। बच्चों ने संगीत से जुड़े सवाल पूछे और जानना चाहा कि कितना रियाज काफी है संगीतकार बनने के लिए। तब यू नागमनी ने बताया कि संगीत साधना है और साधना सारी उम्र जारी रहती है। जब संगीत से जुड़ जाएं तो इसे अपनी रूह में उतार लें। इस दौरान कॉलेज प्रिंसीपल प्रो. डॉ. अनिता कौशल, डॉ. अमिता शर्मा आदि भी मौजूद रहे।

Vocal Recital by Pt. Ulhas Kashalkar – 26.02.2025

Cultural Society of PGGCG-11, Chandigarh in Collaboration with SPIC MACAY organized programme for Music Vocal, Instrumental and Dance students on 26.02.2025 at 11:30 PM.Principal Pro. Dr. Anita Kaushal, Mr. Kanwar Iqbal Singh Dean, Convenor Dr. AmitaSharma andothers members of cultural society lighted the ceremonial lamp in the beginning concert .

दैनिक भास्कर सिटी लाइफ 27-02-2025

सीखने के लिए 8–10 साल बहुत, पर रियाज सारी उम्र करना होता है

Performance

बुधवार को सेक्टर-11 के पीजीजीसीजी-11 में इंडियन क्लासिकल वोकलिस्ट पंडित उल्हास काशलकर पहुंचे। हमने उनसे बात की।

सिटी रिपोर्टर | चंडीगढ़

इस समय भारतीय शास्त्रीय संगीत में सबसे ऊपर और बड़ा नाम है पंडित उल्हास काशलकर का, जो इंडियन क्लासिकल वोकलिस्ट हैं। पांच साल की उम्र से संगीत से जुड़े हैं और अब 70 साल के हैं। तीन घरानों की तालीम और महक इनके गायन में है। 2010 में पद्मश्री, 2008 में संगीत नाटक अकादमी अवॉर्ड, तानसेन सम्मान आदि से सम्मानित हैं। वह बुधवार को चंडीगढ़ सेक्टर-11 के पीजीजीसीजी में स्पिक मैके और पीजीजीसीजी-11 कल्चरल सोसायटी की ओर से आयोजित हिंदुस्तानी वोकल कॉन्सर्ट में परफॉर्म करने पहुंचे। इसमें तबले पर पंडित सुरेश तलवालकर, तानपूरा पर आदित्य शर्मा और हारमोनियम पर अमेया ने संगत की। हमने उनसे उनके सफर पर बात की...।

▪ गुरुओं की मेहनत से शिष्य बहुत कुछ सीखता है। आपके गुरु का आप पर क्या प्रभाव पड़ा?

- यह बात बिल्कुल सही है कि गुरु की मेहनत से प्रेरित होकर शिष्य आगे बढ़ता है। मेरे गुरु पं. गजनराव जोशी से जब मैंने सीखना शुरू किया, उनकी उम्र बहुत ज्यादा थी। शुरुआत में वह कम समय के लिए सिखाते थे। लेकिन, जब उन्होंने देखा कि मैं शायद संगीत में ही आगे बढ़ूंगा तो उन्होंने अपनी उम्र का लिहाज न करते हुए, दिन में एक समय की बजाय तीन से चार बार मुझे सिखाना शुरू किया। वह मेहनत करते तो उनके साथ मैं भी वैसा बनता गया। गुरु का शिष्य के प्रति लगाव मायने रखता है, उसे आगे बढ़ाने में। इस तरह मैं मेरे गुरु से हमेशा बेस्ट करने के लिए प्रेरित हुआ। उनसे सीखा कि गाना वही है, जो खुद को अच्छा लगे।

▪ गुरु शिष्य परंपरा व ऑनलाइन प्लेटफॉर्म को कैसे देखते हैं?

- आप कभी किसी कॉलेज, किसी किताब, किसी ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से संगीत नहीं सीख सकते। सीखना है तो गुरु शिष्य परंपरा से ही चलना होगा। कम से कम आठ दस साल केवल सीखना होगा, लेकिन अभ्यास सारी उम्र जरूरी है। जब शिष्य को समझ नहीं आता तो गुरु यह नहीं कहते कि सीख क्यों नहीं रहे, बल्कि यह सोचते हैं कि स्टूडेंट को समझ क्यों नहीं आ रहा। कहां कमी रह रही है, क्या दूसरे ढंग से सिखाना होगा आदि कई बातें गुरु के जहन में चलती हैं। अगर आप सीखोगे नहीं तो गुरु को तकलीफ होगी और वह कोई नए तरीके से आपको सिखाने की कोशिश करेंगे।

▪ जैसा लोग कहते हैं कि शास्त्रीय संगीत को कम सुनना चाहते हैं। इसके भविष्य को कैसे देखते हैं?

- शास्त्रीय संगीत का भविष्य अच्छा नहीं, बल्कि प्रकाशमान है क्योंकि युवा केवल इसे सीख ही नहीं रहे, बल्कि अच्छे गुरुओं से सीखकर सहेज रहे हैं। संगीत में आगे बढ़ने के लिए खुद ही मेहनत करनी होगी। सरकार म्यूजिक में स्कॉलरशिप देती है, इसे पाने की कोशिश करें।

▪ संगीत सीखने के कुछ समय बाद आपने तय किया कि पूरा समय इसी से जुड़ना है। इस सफर के बारे में बताएं...

- मेरे पिता जी एनडी काशलकर को संगीत का शौक था, उन्होंने खुद संगीत सीखा। इसलिए उन्होंने मुझे पांच साल की उम्र से ही संगीत से जोड़ा। कॉलेज में जाकर मैंने गुरु राजाभाऊ खोगजे और पी खड़नवीस से संगीत सीखा। अभी तक मुझे यह नहीं पता था कि केवल संगीत में आगे बढ़ना है। मैं रेडियो में नौकरी करने लगा। मगर समझ आ गया कि नौकरी और संगीत साथ नहीं चल सकता। फिर संगीत की ट्रेनिंग ग्वालियर, जयपुर और आगरा घराने से हुई। मैंने हर घराने की महक अपने संगीत में उतार दी।

आपको संगीत के अभ्यास के बाद कैसा महसूस होता है?

- मेरा सौभाग्य रहा कि मुझे अच्छे गुरुओं की संगत मिली। जब भी गाता हूं तो गुरुओं की याद आती है। जिस भी राग या बंदिश में उन्होंने जो सीख दी होती है, वह प्रस्तुति के दौरान कानों में गूंजती रहती है। उस दौरान अगर कुछ इधर-उधर हो जाए तो महसूस हो जाता है कि इसको ऐसे बेहतर कर सकते थे। उस समय मन और शरीर में गुरुओं का अस्तित्व होता है। सांगीतिक कार्यक्रम के दौरान गुरु का संदेश और तालीम जहन में होती है और उसके बाद यह चलता है कि कौन-सी बंदिश में क्या बेहतर किया जा सकता था। यानी इस समय हम हम नहीं रहते, संगीतमय हो जाते हैं।

NOSTALGIA Interactive Report – 01.03.2025

Interactive session by Dr. Sonika Gahlawat & Dr. Monika Gahlawat.